जयशंकर प्रसाद की कविता “बीती विभावरी जाग री” का प्रतिपाद्य

जयशंकर प्रसाद की कविता निराला द्वारा संपादित पत्रिका ‘मतवाला’ के मुखपृष्ठ पर छपी थी। प्रस्तुत कविता में कवि प्रसाद ने उषाकाल का अत्यंत मार्मिक और मनोरंजक शब्दचित्र अंकित किया है। कविता में भाव पक्ष एवं शिल्प पक्ष दोनों का ही अत्यंत उत्कृष्ट रूप दिखाई देता है। इस कविता में कवि ने अलौकिक सत्ता को आली कह कर संबोधित किया गया है। भक्तकवियों के रहस्यवाद जैसा चित्रण छायावाद में भी दिखाई देता है, प्रस्तुत कविता में भी रहस्यवाद का आभास हो रहा है। कवि अज्ञात सत्ता को संबोधित करते हुए कह रहे हैं कि रात्रि बीत गई है। आकाश रूपी पनघट में उषा रूपी नागरी तारा रूपी घट डुबो रही है। इस कविता में कवि ने रूपक अलंकार का बहुत सुंदर प्रयोग किया है। पक्षियों के समूह के कलरव को चित्रित करते हुए कुल कुल के प्रयोग द्वारा यमक अलंकार का अति सुंदर प्रयोग किया है। वृक्षों की कोमल पत्तियों का हिलना, किसलय का अंचल डोल रहा पंक्ति के माध्यम से चित्रित किया गया है। लताओं द्वारा अपनी कली रूपी गगरी में नूतन पुष्प - रस भर लाना भी रूपक अलंकार का अत्यंत सुंदर उदाहरण है। अज्ञात सत्ता के प्रति मैत्री भाव की अभिव्यक्ति कविता को विशेष सौन्दर्य प्रदान करता है। कवि कहते हैं कि सुबह हो गई है फिर भी तू अपने अधरों में तीव्र राग पिए हुए, अपनी अलकों में बासंती पवन को बंद किए हुए कोमल विहाग राग को भरकर अभी तक सोई हुई है। सोने के कारण तुम्हें न कोई ध्वनि सुनाई दे रही है, न शीतल – मंद सुगंधित पवन के चलने की अनुभूति हो रही है और न ही राग विहाग की कोमल ध्वनि की गूंज की अनुभूति हो रही है। भक्तकवियों में प्रभाती लिखने की परंपरा रही है। छायावाद में भी कवियों में रहस्यवाद की प्रवृत्ति दिखाई देती है। प्रस्तुत कविता में जयशंकर प्रसाद उस अज्ञात अलौकिक प्रियतम को जगाते हैं और उसे आली कहकर संबोधित करते हैं।

प्रस्तुत कविता में उनका प्रकृति – प्रेम भी द्रष्टव्य है। प्राकृतिक अवयवों सँग रूपक अलंकार का इतना सुंदर समायोजन कवि ने किया है कि पाठक भाव – विभोर हो जाता है। उषा को नागरी, किसलय को अंचल, मुकुल को रस गागरी के रूप में चित्रित कर उन्होंने प्रकृति को सचेतन बना दिया है।

‘कुल – कुल – सा बोल रहा’ कहकर कवि ने यह संकेत किया है कि जिस तरह किसी सुराही या बोतल में भरे हुए पानी को निकालने पर कुल – कुल की सी आवाज आती है, बिल्कुल उसी ध्वनि से मिलती – जुलती आवाज पक्षियों के कलरव की होती है। कवि का अति सूक्ष्म निरीक्षण पक्षियों के कलरव की ध्वनि के अनुकूल शब्दावली का प्रयोग करके कवि ने काव्य – सौन्दर्य में चार चाँद लगा दिया है। कवि ने भाषा में नूतन प्रयोग करने की प्रेरणा दी है। पंत की कविताओं में भी अनुकरणात्मक शब्दावली का प्रयोग हुआ है। जैसे –

“बाँसों का झुरमुट, - संध्या का झुटपुट

हैं चहक रहीं चिड़ियाँ – ‘टी – वी, टीं -टुट – टुट’ ?

लताओं के नव मधुरस से मुकुल – गागरी भरकर लाने का चित्रण करके कवि मानवीकरण का अप्रतिम प्रयोग करते हैं।

‘अधरों में राग अमन्द पिये’ कहकर कवि रात की नीरवता का सजीव चित्रण करते हैं। कवि यह सुंदर कल्पना करते हैं कि वह अलौकिक सत्ता सम्पूर्ण ध्वनियों को पीकर सो गई है, जब तक वह जागेगी नहीं, उसके अधर नहीं खुलेंगे तब तक कोई भी आवाज कैसे बाहर आएगी।

आगे कवि 'अलकों में मलयज बंद किए' कहकर संकेत करते हैं कि सदैव वसंतकालीन शीतल – मंद – सुगंधित पवन प्रातः वेला में ही चलती है। अतः ऐसा जान पड़ता है कि वह अलौकिक सत्ता अपनी घुंघराली अलकावली में इस शीतल – मंद सुगन्धित पवन को बंद करके सो जाती है।